



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	29.07.2020	02	07-08

### धान की सीधी बिजाई वाले खेत में फसल घनत्व कम है तो घबराएं नहीं किसान : प्रो. समर सिंह

भास्कर न्यूज़ | हिसार

पहली बार धान की सीधी बिजाई करने वाले किसानों को खेत में फसल घनत्व कम दिखाई दे रहा है तो उन्हें घबराने की जरूरत नहीं है। जल्द ही उनका खेत फसल से भर जाएगा क्योंकि पहली सिंचाई के बाद ही पौधों का ऊपरी भाग तेजी से बढ़ेगा और अगले 20 दिनों में खेत भरा-भरा नजर आएगा।

उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने किसानों को कृषि संबंधी सलाह देते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि प्रदेश में पहली बार काफी हिस्से में धान की सीधी बिजाई की गई है, जो सरकार द्वारा चलाई जा रही योजना 'मेरा पानी-मेरी

विरासत' को बढ़ावा देने में कारगर साबित हो रही है। धान की सीधी बिजाई वाले खेत में शुरुआती दौर में खेत खाली दिखाई देता है जिससे किसानों के मन में शंका पैदा होती है कि उनकी फसल का घनत्व कम हो गया है और फसल का उत्पादन अच्छा नहीं मिल पाएगा। लेकिन पहली सिंचाई देर से देने पर पौधे पहले जड़ों को बढ़ाते हैं और उसके बाद ही ऊपरी भाग में धीरे-धीरे बढ़ोत्तरी होती है। सिंचाई के अगले 20 दिनों में ही खेत भरा-भरा नजर आने लगेगा। इसके अलावा धान की सीधी बिजाई वाले पौधों की जड़ें मृदा में काफी नीचे तक चली जाती हैं, जो गहराई से भी पानी ले लेती हैं और कई बार समय पर सिंचाई न हो पाने के कारण भी पौधे मरते नहीं।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	29.07.2020	02	05-08

### बदलती जलवायु व ग्लोबल वार्मिंग चिंता का विषय : वीसी

भास्कर न्यूज़ | हिसार

ग्लोबल वार्मिंग के कारण दिन-प्रतिदिन तापमान बढ़ रहा है, जिसके कारण तृफन और समुद्र का स्तर भी बढ़ रहा है। साथ ही मीठे पानी के ग्लेशियर पिघल रहे हैं जिससे पृथ्वी पर जीवन का खतरा मंडरा रहा है, जोकि बहुत ही चिंतनीय है।

उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने 'विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस' पर व्यक्त किए। कुलपति प्रो. समर सिंह ने बदलती जलवायु और ग्लोबल

वार्मिंग पर चिंता जताते हुए कहा कि इससे विश्वभर में पारिस्थितिक असंतुलन फैल रहा है। प्राकृतिक संसाधनों जैसे हवा, पानी, जंगल, जंगली जीवन, जीवाशम और खनिज मानव शोषण के कारण प्रभावित हुए हैं। उन्होंने कहा कि एचएयू के कृषि अपशिष्ट प्रबंधन के लिए नवाचार केंद्र, दीनदयाल उपाध्याय जैविक खेती उत्कृष्टता केंद्र इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने लोगों से आह्वान किया कि वे अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन की बजाय उनके संरक्षण को अधिक महत्व दें।

एचएयू के प्रयासों से बढ़ा प्रदेश में वृक्ष आवरण : डॉ. सहरावत

एचएयू के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन से स्थिति यहां तक पहुंच गई कि पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता महसूस हुई। उन्होंने कहा कि एचएयू हिसार के प्रयासों के कारण हरियाणा में वृक्ष आवरण बढ़ रहा है और लोग प्रकृति के संरक्षण के प्रति जागरूक हो रहे हैं।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	29.07.2020	01	06-08

### राजस्थान से बिखरा टिड़ी दल हिसार जिले में घुसा प्रशासन ने 10 टीमें बनाई, रात को फायर ब्रिगेड की गाड़ियों से किया छिड़काव

भास्कर न्यूज|हिसार/बालसंगम/सिवानी

राजस्थान के बाद टिड़ी दल ने अब हिसार जिले में भी दस्तक दे दी है। सोमवार को शाम करीब पाँच बजे टिड़ियों के दल तलवंडी बादशाहपुर के अलावा बासड़ा और मुकलान, पनिहार, गोरछी, चौधरीवास, गांवड़, सरसाना आदि गांव में आ पहुंचा। किसान भगाने के लिए थाली लेकर खेतों में पहुंच गए। वहाँ कृषि विभाग के अधिकारी भी अलर्ट हो गए हैं। टिड़ी दल पर काबू पाने के लिए कृषि विभाग ने अलग से दस टीमों का गठन किया है। देर रात जिला प्रशासन की ओर से बॉर्डर क्षेत्र में पहुंचे टिड़ी दल पर नियंत्रण पाने के लिए हिसार से फायर ब्रिगेड की गाड़ियां बुलाई गईं और उनसे इलाके में छिड़काव करवाया गया। इसके साथ ही प्रशासन ने स्थानीय किसानों के ट्रैक्टरों के माध्यम से भी छिड़काव करवाया। देर रात तक ऐसडीप्पम हिसार राजेंद्र सिंह, डीडीए डॉ. विनोद फोगट, तहसीलदार जयवीर सिंह, खंड कृषि अधिकारी राजेंद्र श्योराण, कृषि विकास अधिकारी राकेश कुमार सहित कई अधिकारी मोर्चा सभाले हुए थे। खंड कृषि अधिकारी राजेंद्र श्योराण ने बताया कि विभाग की टीमें टिड़ी दल से निपटने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है।

#### टिड़ी दल का हमला

तलवंडी बादशाहपुर, बासड़ा, मुकलान, पनिहार, गोरछी, गांवड़, चौधरीवास, सरसाना में दिखा टिड़ियों का दल



गांव गांवड़ के खेतों के ऊपर से उड़ता टिड़ी दल।

वही दूसरे दिन सिवानी मंडी क्षेत्र में भारी मात्रा में टिड़ी ने फसलों पर आक्रमण किया। टिड़ियों ने गांव लीलस, सैनीवास, देवसर, खेड़ा सहित एक दर्जन गांव में आंतक मचाया। जिसके बाद हिसार की तरफ रुख कर लिया।

#### दुनिया की खतरनाक कीट होती हैं टिड़ियां

हिसार एचएयू के किट विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. योगेश कुमार व कृषि विशेषज्ञ डॉ. अनुराग सांगवान, डॉ. गगन जोशी ने बताया कि दुनियाभर में टिड़ियों की 10 हजार से ज्यादा प्रजातियां पाई जाती हैं, लेकिन भारत में केवल चार प्रजाति ही मिलती है। इसमें रेगिस्टानी टिड़ा, प्रवाजक टिड़ा, बंबई टिड़ा और पेड़ वाला टिड़ा शामिल हैं। इनमें रेगिस्टानी टिड़ों को सबसे ज्यादा खतरनाक माना जाता है। ये हरे-भरे चास के मैदानों में आने पर खतरनाक रूप ले लेते हैं।

#### फसलें बचाने के लिए दस टीमों का गठन किया

■ टिड़ी दल हिसार के गोरछी, पनिहार, चौधरीवास, गांवड़ समेत कई गांव में पहुंच चुका है। किसानों की फसल को बचाने के लिए दस टीमों का गठन किया गया है। रात में कीटनाशक दवाई का छिड़काव किया जाएगा। किसान टिड़ियों की सूचना तुरंत ही विभाग को दें। टीम मीके पर पहुंचने का प्रयास करेंगी। -अरुण यादव, नोडल अधिकारी, टिड़ी नियंत्रण, कृषि विभाग हिसार

#### टिड़ियों के बारे में यह भी जानें

- एचएयू के कीट विभाग अध्यक्ष डॉ. योगेश कुमार व हांसी के कृषि रक्षा अधिकारी डॉ. अनुराग सांगवान व डॉ. गगन जोशी के अनुसार
- 15 किलोमीटर प्रति घण्टे की रफ्तार से उड़ती है टिड़ियां
- 150 किलोमीटर तक की दूरी नापने में सक्षम
- 1 दिन में 8 करोड़ के दून्ड में टिड़ियों फसलों पर कर सकती हैं हमला।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	29.07.2020	04	06-08

# इस सप्ताह एचएयू प्रशासन की बैठक में एजाम को लेकर होगा फैसला

यूजीसी से लेकर आईसीएआर से भी एजाम को लेकर मांगे गए थे सुझाव

हिसार। एचएयू में कई कोर्स की बची परीक्षाओं के न होने पर परीक्षार्थी असमंजस में हैं। एजाम होंगे या नहीं, इसकी चिंता सत्ता रही है। एचएयू के नए वीसी प्रो. समर सिंह ने हाल ही में चार्ज ग्रहण किया है। वीसी प्रो. समर सिंह ने बताया कि परीक्षाओं के संबंध में यूजीसी से लेकर आईसीएआर और अन्य बोर्ड से भी सुझाव मांगे गए थे। एक सप्ताह के अंदर ही विवि प्रशासन की बैठक कर एजाम की स्थिति को क्लीयर किया जाएगा। प्रयास रहेगा कि कोरोना काल में छात्र एवं छात्राओं को किसी भी तरह की परेशानी न हो।

### परीक्षा से पहले ये हैं चुनौतियां

- सामाजिक दूरी के नियमों से केंद्रों की संख्या तय करना।
- जिन केंद्रों पर कोविड-19 सेंटर बने हैं, उन्हें बदलना।
- उन कॉलेजों को चिह्नित करना जो हॉट स्पॉट क्षेत्र में हैं।
- केंद्रों पर सेनिटाइज एवं थर्मल स्क्रीनिंग की व्यवस्था करना।
- ड्यूटी को शिक्षकों-कर्मचारियों को राजी करना।

इसके अलावा नए सत्र में ऑनलाइन पढ़ाई के संबंध में विचार किया जाएगा। कई तरह के ऑनलाइन पढ़ाई के लिए मैटीरियल तैयार कराए गए हैं। विवि ने परीक्षाओं की तैयारी की थ्रू: विश्वविद्यालय में क्वारेंटाइन सेंटर बनाया गया है। यदि परीक्षार्थी परीक्षा देने के लिए आते हैं तो उनके भी कोरोना की चेपेट में आने की आशंका है। जिसको लेकर अभी तक परीक्षा की तारीख निर्धारित नहीं की गई है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	29.07.2020	11	02-07

**हक्की कुलपति ने किसानों को समर्थाएं व उनके समाधान बताए**

# खेत में फसल धनत्व कम है तो घबराएं नहीं किसान

■ धन की सीधी बिजाई सरकार द्वारा चलाई जा रही योजना मेरा पानी-मेरी विरासत को बढ़ावा देने में सहायक

हरिभूमि न्यूज || हिसार

पहली बार धान की सीधी बिजाई करने वाले किसानों को खेत में फसल धनत्व कम दिखाई दे रहा है तो उन्हें घबराने की जरूरत नहीं है। जल्द ही उनका खेत फसल से भर जाएगा। पहली सिंचाई के बाद ही पौधों का ऊपरी भाग तेजी से बढ़ेगा और अगले 20 दिनों में खेत भरा-भरा नजर आएगा। उक्त विचार हक्की कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने किसानों को कृषि संबंधी सलाह देते हुए यह व्यक्ति किए। उन्होंने कहा कि प्रदेश में पहली बार काफी हिस्से में धान की सीधी बिजाई की किए। उन्होंने कहा कि प्रदेश में पहली बार कहा कि धान की सीधी बिजाई बाले खेत में शुरूआती दौर में खेत खाली दिखाई देता गई है, जो सरकार द्वारा चलाई जा रही है जिससे किसानों के मन में शक्ति ऐदा योजना मेरा पानी-मेरी विरासत को बढ़ावा देने में कारगर साबित हो रही है। उन्होंने कहा कि धान की सीधी बिजाई की में शुरूआती दौर में खेत खाली दिखाई देता है जिससे किसानों के मन में शक्ति ऐदा होती है कि उनकी फसल का धनत्व कम हो गया है और फसल का उत्पादन अच्छा नहीं मिल पाएगा। लेकिन पहली सिंचाई दे नहीं मिल पाएगा। लेकिन पहली सिंचाई दे बढ़ाती है। सिंचाई के अगले 20 से दोनों पर पौधे पहले जड़ों को बढ़ाते हैं दिनों में ही खेत भरा-भरा नजर आने और उसके बाद ही ऊपरी भाग में धीर-धीर लगेगा।

वह क्ये उपाय

सीधी बिजाई वाली फसल रोपाई वाली फसल से पीली दिखाई दे, तो इसके समाधान के लिए 10 किलोग्राम जिंक जरूरेट 21 प्रतिशत वा 65 किलोग्राम यूरिया को पहली विमाजित दर 33 प्रतिशत प्रति एकड़ के हिसाब से खेत में डालें। आदि हमेशा सिंचाई के बाद नहीं वाले खेत में ही डालें व युरिया की पहली किशत बिजाई के 28 दिन बाद डाल सकते हैं।

सिंचाई व दोगों के लिए ये तरीका अपनाएं

हक्की के सत्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष हाँ सतलीर सिंह पूर्विया ने बताया कि फसल के नए पाले पूढ़ रहे हों तो एक किलोग्राम फेरस जरूरेट का 100 लीटर पानी में घोल बड़ाकर खेत में डालें। पिर मी समस्या का समाधान न हो तो पौधे को जड़ से उड़ाइकर फेंक दें अथवा बाट रख दें। उन्होंने कहा कि अगर फसल की बिजाई के समय खेत में अच्छी नहीं हो तो पहली सिंचाई को काफी दिनों बाद दिया जा सकता है।

नहीं मिल पाएगा। लेकिन पहली सिंचाई दे बढ़ाती है। सिंचाई के अगले 20 से दोनों पर पौधे पहले जड़ों को बढ़ाते हैं दिनों में ही खेत भरा-भरा नजर आने और उसके बाद ही ऊपरी भाग में धीर-धीर लगेगा।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	29.07.2020	11	04-08

### बदलती जलवायु और ग्लोबल वार्मिंग पिंता का विषय

■ हृषि में विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस पर कृषि वैज्ञानिकों ने रखे विवार

■ कुलपति प्रो. समर बोले, तूफान और समुद्र का स्तर भी बढ़ रहा

हाइगेनी न्यूज़ || हिसार

ग्लोबल वार्मिंग के कारण दिन-प्रतिदिन तापमान बढ़ रहा है। जिसके कारण तूफान और समुद्र का स्तर भी बढ़ रहा है।

साथ ही मीठे पानी के लोनशियर पिघल रहे हैं जिससे पृथ्वी पर जीवन का खतरा मंडगा रहा है, जो बहुत ही चिंतनीय है। उक्त विचार हृषि कुलपति प्रो. समर सिंह ने विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस पर व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि

#### प्रदेश ने बढ़ा वृक्ष आवरण



हृषि अनुसंधान निवेदक डॉ. एसके सहरावत ने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों के अंगार्ह दबाव से स्थिति यहां तक पहुंच गई कि पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता महसूस हुई। इसी को लेकर प्रांस ने 1947 में एक गोली पर्यावरण संरक्षण पर आयोजित कर इसकी रूपरेखा बनाने की कोशिश की। 5 अक्टूबर 1948 में प्रांस ने यूनेस्को के साथ मिलकर इसकी रूपरेखा तैयार की और आयूपीएन की फाऊनेशनल नामक जगह पर स्थापना की। उस समय डॉ. होमी जहांगीर भासा उस गोली में शामिल थे। 1956 में इसका नाम बदल कर आयूपीएन रखा गया जिसका वैश्विक सुरक्षालय म्लांड स्विटजरलैंड में बनाया गया। उन्होंने कहा कि हृषि के प्रयासों के कारण हरियाणा में वृक्ष आवरण बढ़ रहा है और लोग प्रकृति के संरक्षण बारे जागरूक हो रहे हैं।

विश्वविद्यालय के कृषि अपशिष्ट प्रबंधन हेतु नवाचार केंद्र, दीनदयाल उपाध्याय जैविक खेती उक्ताता केंद्र इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने आमजन से आह्वान किया कि वे अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अन्यायुक्त दोहन की बजाय उनके संरक्षण को महत्व दें।

#### प्रकृति को संरक्षित करना जरूरी

कृषि विनियोग के विभागाध्यक्ष डॉ. आरएस दिल्लो ने कहा कि वर्तमान में प्रकृति और पर्यावरण ती स्थिति बहुत ही चिंताजनक है। यह समस्या केवल किसी एक देश या देशों के महसूस होने वाली नहीं है, बल्कि इसले पूरे विश्व को प्रभावित किया है। प्राकृतिक दुरिया व विश्व को अविश्वसनीय तापांतरण से बढ़ते खतरे का समान करना पड़ रहा है, इसलिए सत् विकास को प्राप्त करने के लिए प्रकृति को संरक्षित करना बहुत जरूरी है। उन्होंने बताया कि विवि का वानिकी विभाग प्राकृतिक संसाधनों की महत्वता और विवेश के किसानों के हित को ध्यान में रखकर कई वर्षों से शोध कार्य कर रहा है।

#### विवेश ने परिवित्रित आकांक्षाएं



कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहा कि इससे विश्व मर में पारिस्थितिक असंतुलन फैल रहा है। प्राकृतिक संसाधनों जैसे हवा, पानी, जगल, जगली जीवन, जीवाश्म इधन और खनिज मानव शेषण के कारण प्रभावित हुए हैं। वर्तमान और भावी पीढ़ियों की सुरक्षा के लिए स्वस्थ वातावरण छनाना आवश्यक है। इसलिए विश्व मर के लोगों में प्राकृतिक संसाधनों की बहत के महत्व को समझने के साथ-साथ संरक्षित करने और इसे नुकसान पहुंचने के परिणामों को समझने के लिए जागरूकता बढ़ाना बहुत महत्वपूर्ण है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	29.07.2020	04	03-05

### ग्लोबल वार्मिंग से पिघल रहे मीठे पानी के ग्लेशियर

### एचएयू में विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस पर कृषि वैज्ञानिकों ने रखे विचार

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। ग्लोबल वार्मिंग के कारण दिन-प्रतिदिन तापमान बढ़ रहा है, जिससे तूफान और समुद्र का स्तर भी बढ़ रहा है। साथ ही मीठे पानी के ग्लेशियर पिघल रहे हैं। इस बजह से पृथ्वी पर जीवन का खतरा मंडरा रहा है, जो बहुत ही चिंतनीय है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति

प्रो. समर सिंह ने 'विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस' पर आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किए।

कुलपति ने बदलती जलवायु और ग्लोबल वार्मिंग पर चिंता जताते हुए कहा कि इससे विश्व भर में पारिस्थितिक असंतुलन फैल रहा है। इसलिए विश्व भर के लोगों में प्राकृतिक संसाधनों की बचत के महत्व को समझने के साथ-साथ इनके पुनःचक्रण करने, संरक्षित करने और इसे नुकसान पहुंचाने के परिणामों

को समझने के लिए जागरूकता बढ़ाना बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के कृषि अपारिश्च प्रबंधन के लिए नवाचार केंद्र, दीनदयाल उपाध्याय जैविक खेती उत्कृष्टता केंद्र इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इस दौरान अनुसंधान निदेशक डॉ. एस. सहरावत, वानिकी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. आरएस डिल्लो आदि

मौजूद रहे।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	29.07.2020	02	01-05

### बदलती जलवायु त ग्लोबल वार्मिंग चिंता का विषय

#### ■ विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस पर कृषि वैज्ञानिकों ने रखे विचार

हिसार, 28 जुलाई (ब्यूरो): ग्लोबल वार्मिंग के कारण दिन-प्रतिदिन तापमान बढ़ रहा है, जिसके कारण तूफान और समुद्र का स्तर भी बढ़ रहा है। साथ ही मौसे पानी के ग्लोशियर पिछले ही वर्षों से घृवी पर जीवन का खतरा मंडरा रहा है, जो बहुत ही चिंतीय है। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने 'विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस' पर व्यक्त किए।

कुलपति ने बदलती जलवायु और ग्लोबल वार्मिंग पर चिंता जताते हुए कहा कि इससे विश्वभर में पारिस्थितिक असंतुलन फैल रहा है। प्राकृतिक संसाधनों जैसे हवा, पानी, जंगल, जंगली जीवन, जीवाशम ईंधन और खनिज मानव शोषण के कारण प्रभावित हुए हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान और भावी पीढ़ियों की सुरक्षा के लिए स्वस्थ वातावरण बनाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के कृषि अपशिष्ट प्रबंधन हेतु नवाचार केंद्र, दीनदयाल उपाध्याय जैविक खेती उत्कृष्टता केंद्र इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने आमजन से आह्वान किया कि वे अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन की बजाय उनके संरक्षण को अधिक महत्व दें।

#### विश्वविद्यालय के प्रयासों से बढ़ा प्रदेश में वृक्ष आवरण : डॉ. सहरावत

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस. के. सहरावत ने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन से रिश्तों यहाँ तक पहुंच गई कि पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता महसूस हुई। इसी को लेकर फ्रांस ने 1947 में पर्यावरण संरक्षण पर एक गोष्ठी आयोजित कर इसकी रूपरेखा बनाने की। 1948 में फ्रांस ने योग्यकारी समाजिक और आर्थिक यू.पी.एस. (इन्टरनेशनल यूनियन फॉर प्रोटैक्शन ऑफ नेवर) की फांटेनलियू होमी जहांगीर भाषा उस गोष्ठी में शामिल थे। 1956 में इसका नाम बदल कर आई.यू.सी.एन. रखाग्राजिसका वैशेषिक मुख्यालय ग्लांड (स्विटजरलैंड) में बनाया गया। उन्होंने कहा कि चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के प्रयास के कारण हरियाणा में वृक्ष आवरण बढ़ रहा है और लोग प्रकृति संरक्षण के प्रति जागरूक हो रहे हैं।

#### प्रकृति को संरक्षित करना जरूरी : डॉ. ढिल्लो

वानिकी विभागाध्यक्ष डॉ. आर.एस. ढिल्लो ने कहा कि वर्तमान में प्रकृति और पर्यावरण की रिश्तों बहुत ही चिंताजनक है। इस समया ने पूरे विश्व को प्रभावित किया है। प्राकृतिक दुनियाव विश्व को अनिश्चित प्रथाओं से बदले खतरे का सामना करना पड़ रहा है, इसलिए सतत विकास को प्राप्त करने के लिए प्रकृति को संरक्षित करना बहुत जरूरी है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय का वानिकी विभाग प्राकृतिक संसाधनों की महत्वा और प्रदेश के किसानों के हित को ध्यान में रखकर कई वर्षों से शोध कार्य कर रहा है।



कुलपति प्रोफेसर समर सिंह, अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत व डॉ. आर.एस. ढिल्लो।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी (दिल्ली)	28.07.2020	--	--

# धान की सीधी बिजाई वाले खेत में फसल घनत्व कम है तो घबराएं नहीं किसान : कुलपति प्रो. समर सिंह

हिसार, 28 जुलाई (राज पराशर) : पहली बार धान की सीधी बिजाई करने वाले किसानों को खेत में फसल घनत्व कम दिखाई दे रहा है तो उन्हें घबराने की जरूरत नहीं है। जल्द ही उनका खेत फसल से भर जाएगा क्योंकि पहली सिंचाई के बाद ही पौधों का ऊपरी भाग तेजी से बढ़ेगा और अगले 20 दिनों में खेत भरा-भरा नजर आएगा। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने किसानों को कृषि संबंधी सलाह देते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि प्रदेश में पहली बार काफी हिस्से में धान की सीधी बिजाई की गई है, जो सरकार द्वारा चलाई जा रही

**किसानों  
को फसल में आने वाली  
समस्याएं व उनके समाधान  
बताए**

योजना 'मेरा पानी-मेरी विरासत' को बढ़ावा देने में कारगर साबित हो रही है। उन्होंने कहा कि धान की सीधी बिजाई वाले खेत में शुरूआती दौर में खेत खाली दिखाई देता है जिससे किसानों के मन में शंका पैदा होती है कि उनकी फसल का घनत्व कम हो गया है और फसल का उत्पादन अच्छा नहीं मिल पाएगा।

लेकिन पहली सिंचाई देर से देने पर पौधे पहले जड़ों को बढ़ाते हैं और उसके बाद ही ऊपरी भाग में धीरे-धीरे बढ़ोत्तरी होती है। सिंचाई के अगले 20 दिनों में ही खेत भरा-भरा नजर आने लगेगा। इसके अलावा धान की सीधी बिजाई वाले पौधों की जड़ें मृदा में काफी नीचे तक चली जाती हैं, जो



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	28.07.2020	--	--

### हिसार/अन्य

### पांच बजे 3

#### हक्कि में विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस पर कृषि वैज्ञानिकों के विचार

## बदलती जलवायु और ग्लोबल चार्मिंग चिंता का विषय : प्रो. समर सिंह

पांच बजे लूप

हिसार। म्लोबल चार्मिंग के कारण दिन-प्रतिदिन तापमान बढ़ रहा है जिसके कारण तूफान और समुद्र का सतर भी बढ़ रहा है। साथ ही मौसों पानी के लोकलियर प्रभाव गंभीर हैं जिससे पृथ्वी पर जीवन का खतरा मंड़ा रहा है, जो बहुत ही चिनानीय है। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने 'विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस' पर व्यक्त किए। कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने बदलती जलवायु और ग्लोबल चार्मिंग पर चिंता जताते हुए कहा कि इससे विश्व भर में पारिवहिक असुरक्षा फैल रहा है। प्राकृतिक संसाधनों जैसे हवा, पानी, जंगल, जलसंग्रहीय जीवन, जीवविवरण इधर और झुग्निज मानव शोषण के कारण प्रभावित हो रहे हैं। उक्तोंने कहा कि जीवन और भावी पीढ़ीयों की सुरक्षा के

लिए स्वयं वातावरण बनाना आवश्यक है। इसलिए विश्व भर के लोगों में प्राकृतिक संसाधनों की बचत के महत्व को समझने के साथ-साथ इनके पुनःवाहन करने, संरक्षित करने और इस नुकसान सुखानों के परिणामों को समझने के लिए जागरूकता बढ़ाना बहुत महत्वपूर्ण है। उक्तोंने कहा कि विश्वविद्यालय के कृषि अधिदिवास प्रबंधन हेतु नवाचार केंद्र, दोनों दास्तावेज जीविक खेतों उत्कृष्टता केंद्र इस दिवस में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। उक्तोंने आप जन से आलोचन किया कि वे अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अंशांश दोहन की बजाय उनके संरक्षण को अधिक महत्व दें।

विश्वविद्यालय के प्राचारण से बढ़ा प्रेषण में बृश आवश्यकता महसूस हुई। इसी को लेकर

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहायता ने कहा कि प्राकृतिक संरक्षण पर आरोग्यता कर इसकी रूपरेखा



संसाधनों के अंशांश दोहन से स्थिति यही तक पहुंच गई कि पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता महसूस हुई। इसी को लेकर डॉ. एस.के. सहायता ने कहा कि वर्तमान में

विनाने की कोशिश की। 5 अक्टूबर 1948 में प्राप्त ने यूनेस्को के साथ मिलकर इसकी रूपरेखा तैयार की और आई.यू.पी.एन. (इटनेशनल यूनियन फॉर प्रोटेशन ऑफ नेचर) की फॉन्टेनविल्यू नामक जगह पर अंतर्राष्ट्रीय प्रशासनों से बढ़ते खतरे का समना स्थापना की। उस समय डॉ. होमी जांगोर भाभा उम गोश्वामी में शमिल थे। 1956 में इसका नाम बदल कर आई.यू.सी.एन. रखा गया। जिसका वैश्विक मुद्रणालय स्टाड (स्विट्जरलैंड) में बनाया गया। उक्तोंने कहा कि विश्वविद्यालय का वानिकी विभाग प्राकृतिक संसाधनों की महत्वता और प्रटेस के किसानों के हित को ध्यान में रखकर कई बांधों से विभिन्न कार्य कर रहा है। यह विभाग वर्तमान आवश्यकता बढ़ रही है और लोग प्रकृति के संरक्षण के प्रति जागरूक हो रहे हैं।

सतत विकास के लिए प्रकृति को संरक्षित करना जरूरी : डॉ. आ.एस. दिल्ली वानिकी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. आ.एस. दिल्ली ने कहा कि वर्तमान में प्रकृति और पर्यावरण की स्थिति बहुत ही प्रारंभिकी पर शोध कार्य कर रहा है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	28.07.2020	--	--

# बदलती जलवायु और ग्लोबल वार्मिंग घिंता का विषयः कुलपति प्रोफेसर समर सिंह

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। ग्लोबल वार्मिंग के कारण दिन-प्रतीक्रिया तापमान बढ़ रहा है जिसके कारण तूफान और समुद्र का स्तर भी बढ़ रहा है। साथ ही मौसूली पानी के लेशियर पिघल रहे हैं जिससे पृथ्वी पर जीवन का खतरा मंडरा रहा है, जो बहुत ही चिंतनीय है। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह, अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत व डॉ. आर.एस. दिलो के फाइल फोटो।



हिसार। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस पर व्यक्त किए। कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने बदलती जलवायु और ग्लोबल वार्मिंग पर चिंता जताते हुए कहा कि इससे विश्व भर में पारिस्थितिक असंतुलन फैल रहा है। प्राकृतिक संसाधनों जैसे हवा, पानी, जंगल, जंगली जीवन, जीवाशम ईंधन और खनिज मानव शोषण के कारण प्रभावित हुए हैं। उन्होंने कहा कि

वर्तमान और भावी पीढ़ियों की सुरक्षा के लिए स्वस्थ वातावरण बनाना आवश्यक है। इसलिए विश्व भर के लोगों में प्राकृतिक संसाधनों की संरक्षित करने और इसे नुकसान पहुंचाने के परिणामों को समझने के लिए जागरूकता बढ़ाना बहुत महत्वपूर्ण है।

उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के

केंद्र, दीनदयाल उपाध्याय जैविक के लिए दीनदयाल उपाध्याय जैविक खेती उद्योगों के लिए उत्कृष्टता केंद्र इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने आम जन से आह्वान किया कि वे अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अधिकृत दोहन की बजाय उनके संरक्षण को अधिक महत्व दें।

विश्वविद्यालय के प्रयासों से बढ़ा

प्रदेश में वृक्ष आवरण = डॉ.

एस.के. सहरावत

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक

एचएयू में विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस पर कृषि वैज्ञानिकों के विचार

डॉ. एस.के. सहरावत ने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों के अधिकृत दोहन से स्थिति यहां तक पहुंच गई कि पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता महसूस हुई। इसी को लेकर फांस ने 1947 में एक गोष्ठी पर्यावरण संरक्षण पर आयोजित कर इसकी रूपरेखा बनाने की कोशिश की। 5 अक्टूबर 1948 में फांस ने यूनेस्को के साथ मिलकर इसकी रूपरेखा तैयार की और आई.यू.पी.एन. (इन्टरनेशनल यूनियन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ नेचर) की फांनेनश्नल नामक जगह पर स्थापना की। उस समय डॉ. होमी जहांगीर भाभा उस गोष्ठी में शामिल थे। 1956 में इसका नाम बदल कर आई.यू.पी.एन. रखा गया जिसका वैश्विक मुख्यालय ग्लांड (स्टिटजरलैंड) में बनाया गया।

उन्होंने कहा कि चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के प्रयासों के कारण हरियाणा में वृक्ष आवरण बढ़ रहा है और लोग प्रकृति के संरक्षण के प्रति जागरूक हो रहे हैं।

सतत विकास के लिए प्रकृति को संरक्षित करना जरूरी = डॉ. आर.एस. दिलो

वानिकी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. आर.एस. दिलो ने कहा कि वर्तमान में प्रकृति और पर्यावरण की स्थिति बहुत ही चिंताजनक है। यह समस्या केवल किसी एक देश या देशों के समूह तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसने पूरे विश्व को प्रभावित किया है। प्राकृतिक दुनिया व विश्व को अनिश्चित प्रथाओं से बढ़ते खतरे का सामना करना पड़ रहा है, इसलिए सतत विकास को प्राप्त करने के लिए प्रकृति को संरक्षित करना बहुत जरूरी है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल न्यूज	28.07.2020	--	--

### बदलती जलवायु और ग्लोबल वार्मिंग चिंता का विषयः प्रो. समर सिंह

पल पल न्यूजः हिसार, 28 जुलाई। ग्लोबल वार्मिंग के कारण दिन-प्रतिदिन तापमान बढ़ रहा है जिसके कारण तूफान और समुद्र का स्तर भी बढ़ रहा है। साथ ही मीठे पानी के ग्लोशियर पिघल रहे हैं जिससे पृथ्वी पर जीवन का खतरा मंडरा रहा है, जो बहुत ही चिंतनीय है। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने 'विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस' पर व्यक्त किए। कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने बदलती जलवायु और ग्लोबल वार्मिंग पर चिंता जताते हुए कहा कि इससे विश्व भर में पारिस्थितिक असंतुलन फैल रहा है। प्राकृतिक



संसाधनों जैसे हवा, पानी, जंगल, जंगली जीवन, जीवाशम इंधन और खनिज मानव शोषण के कारण प्रभावित हुए हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान और भावी पीढ़ियों की सुरक्षा के लिए स्वस्थ वातावरण बनाना आवश्यक है। इसलिए विश्व भर के लोगों में प्राकृतिक संसाधनों की बचत के महत्व को समझने के साथ-साथ इनके पुनर्व्यक्त करने, संरक्षित करने और इसे नुकसान पहुंचाने के परिणामों को समझने के लिए जागरूकता बढ़ाना बहुत महत्वपूर्ण

है। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहावत ने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन से स्थिति यहां तक पहुंच गई कि पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता महसूस हुई। इसी को लेकर फ्रांस ने 1947 में एक गोष्टी पर्यावरण संरक्षण पर आयोजित कर इसकी रूपरेखा बनाने की कोशिश की। 5 अक्टूबर 1948 में फ्रांस ने यूनेस्को के साथ मिलकर इसकी रूपरेखा तैयार की और आई.यू.पी.एन. (इन्टरनेशनल यूनियन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ नेचर)

की फांनेनब्ल्यू नामक जगह पर स्थापना की। वानिकी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. आर.एस. ढिलो ने कहा कि वर्तमान में प्रकृति और पर्यावरण की स्थिति बहुत ही चिंताजनक है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय का वानिकी विभाग प्राकृतिक संसाधनों की महत्वता और प्रदेश के किसानों के हित को ध्यान में रखकर कई वर्षों से शोध कार्य कर रहा है। यह विभाग वर्तमान ग्लोबल वार्मिंग और बदलती जलवायु को ध्यान में रखकर अखिल भारतीय कृषि वानिकी समन्वित अनुसंधान परियोजना के तहत विभिन्न कृषि वानिकी प्रणालियों जैसे मेड पर पेड व वृक्ष सुधार, आनुवांशिक पौध सामग्री का उत्पादन करने के लिए नर्सरी प्रौद्योगिकी पर शोध कार्य कर रहा है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

### लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	28.07.2020	--	--

### एचएयू के इंटरनेशनल छात्रावासों में छात्रों को शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के दिए टिप्प



#### पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 28 जुलाई : कोरोना महामारी से निपटने के लिए इसके प्रति लोगों का जागरूक होना बहुत जरूरी है। इसी को ध्यान में रखते हुए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह के दिशा-निर्देशों पर विश्वविद्यालय में समय-समय पर

कोरोना महामारी के प्रति जागरूक किया जा रहा है। इसी कड़ी में इंटरनेशनल छात्रावासों में छात्र कल्याण निदेशक डॉ. देवेंद्र सिंह दहिया की अगुवाई में दौरा किया गया। इस दौरान लड़कों के त्रिवेणी व लड़कियों के यमुनोत्री इंटरनेशनल छात्रावास में जाकर विदेशी विद्यार्थियों को जागरूक किया। इस

दौरान सामाजिक दूरी व मास्क का विशेष ध्यान रखा गया। छात्र कल्याण निदेशक डॉ. देवेंद्र सिंह दहिया ने विद्यार्थियों को संबोधित करीब 47 विद्यार्थी रह रहे हैं। करते हुए कहा कि नियमित योग, प्राणायाम व अन्य योग क्रियाओं द्वारा शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाया जा सकता है। इसके सिंह दहिया ने बताया कि इस समय दें और इसकी जांच करवाए। विश्वविद्यालय के दोनों इंटरनेशनल सहायक छात्र कल्याण निदेशक डॉ. शात्रावासों त्रिवेणी व यमुनोत्री में जीतराम शर्मा ने बताया कि लड़कियों के छात्रावास में यम्भार, कोरोना वायरस और मौसम को नेपाल, भूटान, तंजानिया, फिजी व ध्यान में रखते हुए एयर कंडीशनर के नाइजीरिया से 19 लड़कियां जबकि उपयोग से बचा जाएं और अपने लड़कों के छात्रावास में कर्मरों के दरवाजे और खिड़कियां अफगानिस्तान, यम्भार आदि देशों से प्राकृतिक हवा के लिए ज्यादातर 28 विद्यार्थी रह रहे हैं। उन्होंने खुले रखे जाने चाहिए। उन्होंने कहा विद्यार्थियों को नियमित व्यायाम किए विश्वविद्यालय का कैंपस करने व ताजा फल सब्जियों के अस्पताल 24 घंटे उनकी सेवा के प्रयोग करने की सलाह दी। इस लिए खुला है। उन्होंने विद्यार्थियों से दौरान छात्र कल्याण निदेशक कहा कि जब भी उन्हें खांसी, गले का पालन किया जाना बहुत जरूरी है। इसके लिए सामाजिक दूरी, में खराश, सिरदर्द, बुखार आदि किसी प्रकार के लक्षण दिखाई दें तो (महिला छात्रावास) डॉ. मंजु तुरंत इसकी जानकारी अस्पताल में मेहता, वार्डन डॉ. अनिल वत्स व डॉ. जयन्ती टोकस भी मौजूद थे।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जुल्म की जंग	27.07.2020	--	--

### विश्वविद्यालय के इंटरनेशनल छात्रावासों में विद्यार्थियों को कोरोना सेंकट के प्रति किया जागरूक

Posted on July 27, 2020 by Admin |

हिसार, राजनेंद्र अवाकाल: कोरोना महामारी से निपटने के लिए इसके प्रति लोगों का जागरूक होना बहुत जरूरी है। इसी को ध्यान में रखते हुए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह के दिशा निर्दशों पर विश्वविद्यालय में समय-समय पर कोरोना महामारी के प्रति जागरूक किया जा रहा है। इसी कड़ी में इंटरनेशनल छात्रावासों में छात्र कल्याण निदेशक डॉ. देवेंद्र सिंह दहिया की अगुवाई में दौरा किया गया। इस दौरान लड़कों के त्रिवेणी व लड़कियों के यमुनोंगी इंटरनेशनल छात्रावास में जाकर विदेशी विद्यार्थियों को जागरूक किया। इस दौरान सामाजिक दूरी व मास्क का विशेष ध्यान रखा गया। छात्र कल्याण निदेशक डॉ. देवेंद्र सिंह दहिया ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि नियमित योग, प्राणायाम व अन्य योग क्रियाओं द्वारा शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाया जा सकता है। इसके अलावा ध्यान द्वारा भी प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि इस कोरोना महामारी से निपटने के लिए कैंद्र व राज्य सरकार द्वारा जारी हिदायतों का पालन किया जाना बहुत जरूरी है। इसके लिए सामाजिक दूरी, मास्क, व सेनेटाइजेशन का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए। डॉ. देवेंद्र सिंह दहिया ने बताया कि इस समय विश्वविद्यालय के दोनों इंटरनेशनल छात्रावासों त्रिवेणी व यमुनोंगी में करीब 47 विद्यार्थी रह रहे हैं। कोरोना वायरस और मौसम को ध्यान में रखते हुए पर्यावरण कंडीशनर के उपयोग से बचा जाएं और अपने कमरों के दरवाजे और छिड़कियां प्राकृतिक हवा के लिए ऊदातर खुले रखें जाने चाहिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय का कैंपस अस्पताल 24 घंटे उनकी सेवा के लिए खुला है। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि जब भी उन्हें खांसी, गले में खराश, सिरदर्द, बुखार आदि किसी प्रकार के लक्षण दिखाई दें तो तुरंत इसकी जानकारी अस्पताल में दें और इसकी जांच करवाएं। सहायक छात्र कल्याण निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने बताया कि लड़कियों के छात्रावास में म्यांमार, लेपाल, भूटान, तंजानिया, फिजी व नाइजीरिया से 19 लड़कियां जबकि लड़कों के छात्रावास में अफगानिस्तान, म्यांमार आदि देशों से 28 विद्यार्थी रह रहे हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को नियमित ध्यायाम करने व ताजा फल संदिग्यों के प्रयोग करने की सलाह दी। इस दौरान छात्र कल्याण निदेशक के साथ सहायक छात्र कल्याण निदेशक (महिला छात्रावास) डॉ. मंजू मेहता, वार्ड डॉ. अनिल वत्स व डॉ. जयन्ती टोकस भी मौजूद थे।





## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जुल्म की जंग	22.07.2020	--	--

### पेड़ों की लुप्त होती प्रजातियों को बचाएं किसान

Posted on July 22, 2020 by Admin |

हिसार, राजेन्द्र अग्रवाल: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बालसमंद स्थित अनुसंधान फार्म पर मंगलवार को किसान-वैज्ञानिक गोष्ठी का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय प्रोफेसर समर सिंह के दिशा-निर्देशानुसार किसानों को खरीफ फसलों व आधुनिक तकनीकों की जानकारी देने के उद्देश्य से इस गोष्ठी का आयोजन किया गया। वन महोत्सव के अवसर पर इस गोष्ठी का आयोजन वालिकी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. आर.एस. ढिलो की देखरेख में किया गया। इस गोष्ठी में बालसमंद गांव के 22 किसानों ने आग लिया जिसमें विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को खरीफ फसलों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया और किसानों द्वारा इससे संबंधित पूछे गए विभिन्न सवालों के जवाब भी दिए। कोविड-19 के चलते इस गोष्ठी में सामाजिक दूरी व मासक का विशेष ध्यान रखा गया। किसानों को संबोधित करते हुए बालसमंद अनुसंधान फार्म के इंचार्ज डॉ. विरेन्द्र दलाल ने कहा कि मौजूदा समय में कैर, रोहिङा, खेड़ी जैसे वृक्षों की प्रजातियां लगभग विलुप्त हो रही हैं। ऐसे में इन प्रजातियों को बचाना बहुत ही आवश्यक है क्योंकि इन प्रजातियों की औषधीय महत्ता बहुत अधिक है। उन्होंने कहा कि पहले किसान अपने खेतों में हल घलाते समय ऐसे पेड़ों को बचा लेते थे तो किन आजकल किसानों ने इन प्रजातियों के पेड़ों को जानकारी के अभाव में नष्ट कर दिया है। इसके अलावा किसानों को संबोधित करते हुए चारा विभाग से डॉ. सतपाल ने शुष्क क्षेत्रों में चारों की फसलों व खरीफ मौसम में लगाने वाली फसल बाजरा, मूँग, रवार इत्यादि की वैज्ञानिक सम्प्य कियाओं की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि बालसमंद जैसे शुष्क क्षेत्र के लिए धारण धास, बाजरा व ज्वार चारों की छट्टिं से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। धारण धास में प्रोटीन की मात्रा अधिक होती है जिससे किसानों के दुधारू पशुओं का दूग्ध उत्पादन बढ़ जाता है। रामधन सिंह बीज फार्म से डॉ. राजेश कथवाल ने बताया कि मानसून के दौरान वर्षा के कारण गवार व मूँग फसलों को बोने के लिए अगस्त माह का पहला सप्ताह उपयुक्त है। शुष्क क्षेत्रों में इस सप्ताह में इन फसलों को बोया जा सकता है। साथ ही गवार के बीज का उपचार स्ट्रैप्टोसाइकिलन से 1 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज दर के हिसाब से किया जाना चाहिए जिससे बैंकेटरियल लीफ ब्लाईट को काफी हद तक रोका जा सकता है। इसके अलावा किसानों को बहुउद्देशीय वानिकी पेड़ों की नर्सरी व ट्रांसप्लानेशन प्रबन्धन पर भी जानकारी दी गई।





# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

## लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ऑनलाइन (यूनिक हरियाणा)	28.07.2020	--	--

धान की सीधी बिजाई वाले खेत में  
फसल घनत्व कम है तो घबराएं नहीं  
किसान : कुलपति प्रोफेसर समर  
सिंह

२०२४ ई. २०२० - प्रकाशन के मुद्रित संस्करण की विवरण  
चौथी चालन सिंह इवलाला कृषि विभाग विद्युत्यालय के कृजपाली शोपिंग सेंटर सिंह  
से लिखित है। यहाँ की सभी बिलाई चाली कम्पनी ने आमे वाली समझदारी ने उनके  
समझदार बताया।  
बाल की सभी बिलाई कम्पनी सरकार द्वारा चलाई जा रही ओज़ाना ऐसा पानी-संरी  
विद्युत्यालय ने बदलाव देने के सहायतक  
दिनांक : २५ अगस्त

पहली बार यात्रा की सीधी मिजाह करने वाले किसानों को खेत में फसल बाहर कम दिखाकर दें तो उन्हें लकड़ी की जगत नहीं है। जबकि ही उनका खेत फसल से भर जाना कमज़ोर पहली मिजाह के नाम ही पापी का काबी भाग लेती है बदला और अगले 20 दिनों में खेत भरा-भरा जाता है। उनके चरण चाही चरण सिंह डिप्पाणा कृषि विवरणिक्यालय के कृषिपति प्रोफेसर लम्बर प्रिंसिप ने किसानों का कृषि संबंधी सालाह देते हुए यह कहा कि उन्होंने कहा कि प्रवासी में पहली बार काकी छिस्से में धान की सीधी मिजाह की माफ़ के, जो साकार दुर्लभ चलाक जा रही थी। यात्रा-पापी-जीवी विवाहात को बढ़ावा देने में कामगर साक्षित हो रही है। उन्होंने कहा कि धान की सीधी मिजाह वाले खेत में शुक्रआती दीर में खेत बालों किसाह देता है किसानों के मान में शेष पैदा होती है कि उनकी फसल का बराबर हो जाया है।



उत्पादन अनुकूल नहीं मिल पाएगा। क्रियाकाल वेद से देखें पर योग्य पहली जड़ी को बदलते हैं और उसके बाद ही उपरी भाग में धीर-धीर नदिवाली होती है। क्रियाकाल के अग्रण 20 दिनों में दो खेत भया-भया नदिर आगे लगानी। इसके अन्तार भाग की दोषीय क्रियाकाल बाल योग्यी को जड़ी शुद्धा में काफी नीचे तक चढ़ा जाती है, जो गहराई से भी पानी से छेत्रों हैं और एक बाल समय पर क्रियाकाल न हो पाने के बाबत भी योग्य असर नहीं। योग्यकार समय क्रियाकाल से किसानी की सलाह देते हुए कहा गया अग्रण दोषीय क्रियाकाली काली कफल योग्यी बाली कफल से योग्य क्रियाकाल है, तो इसके समाप्तान के बिना 1.0 किलोग्राम वजन क्षमता (21 प्रतिशत) वा 8.6 किलोग्राम दूरिया की बहुती किसानित दर (33 प्रतिशत) प्राप्ति करका के हिसाब से छेत्र में आये। याकूब हमीदा क्रियाकाल के बाद नीचे बाल तक जो हो डाले जा सकिया की पहली क्रियाकाल नियम 20 दिन बाल बाल सकते हैं। उन्हें किसानी की सलाह पढ़ी कि क्रियाकाल योग्यी की जांच करता कर ही कफल में जरूरत अनुसार योग्यक तरज डालने



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ऑनलाइन (यूनिक हरियाणा)	28.07.2020	--	--

### बदलती जलवायु और ग्लोबल वार्मिंग चिंता का विषय : कुलपति प्रोफेसर समर सिंह

July 28, 2020 • Rakesh • Haryana News

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस  
पर कृषि वैज्ञानिकों के विचार

हिसार : 28 जुलाई

ग्लोबल वार्मिंग के कारण दिन-प्रतिदिन तापमान बढ़ रहा है जिसके कारण तूफान  
और समुद्र का स्तर भी बढ़ रहा है। साथ ही मीठे पानी के ग्लोशियर पिघल रहे हैं  
जिससे पृथकी पर जीवन का खतरा मंडरा रहा है, जो बहुत ही चिंतनीय है। उक्त  
विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर  
समर सिंह ने 'विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस' पर व्यक्त किए।

